ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

धर्म प्रचार कमेटी (शि: गु: प्र: कमेटी), श्री अमृतसर की ओर से द्वि-वर्षीय सिख धर्म अध्ययन पत्राचार कोर्स का महत्व एवं उद्देश्य

यह एक ऐतिहासिक सत्य है कि सिख धर्म ने विश्व धर्म क्षेत्र में सम्मानीय एवं उल्लेखनीय स्थान स्थापित कर लिया है। गत दो दशकों से तो विश्व भर के धर्म अध्ययन से जुड़े अध्यापक, अनुसंधानकर्ता और शैक्षिक क्षेत्र में स्थापित धर्म-शास्त्री, सिख धर्म को समझने तथा समझाने में विशेष रुचि दिखा रहे हैं। इस क्षेत्र से संबंधित विद्वानों के लिए सिख धर्म के सिद्धांत, विश्वास एवं व्यवहार इतने अर्थपूर्ण एवं विश्वसनीय हैं कि अब सिख धर्म ही नये युग के धर्म के रूप में स्वीकार किया जा रहा है। इसका कारण है श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की 'धुर की बाणी' का सर्वकालिक सत्य का संदेश, जो देश-काल की सीमा को पार करके विश्व समाज के मनुष्य को जीवन के प्रत्येक कार्य करने हेतु सुयोग्य मार्गदर्शन प्रदान करने और जीवन के साथ जुड़ी समस्याओं का समाधान करने के सक्षम है। 'उपदेसु चहु वरना कउ साझा' वाली 'धुर की बाणी का यह नूरी/अगंमी संदेश मानव-चेतना को इतना प्रभावित करता है कि वह स्वत: संतुलित जीवनयापन करने की सोच का धारक बन जाता है।

नि:संदेह वर्तमान ज्ञान तथा विज्ञान के नित्य-प्रतिदिन के नये आविष्कारों ने मनुष्य को शारीरिक सुख व आनंद लेने की अधिकाधिक युक्तियां प्रदान की हैं। परंतु तन के इन सुख-साधनों के कारण फैल रहा निजवाद, व्यक्तिगत लाभ, आतंकवाद, लूटवाद, डेरावाद, अहंकारवाद, फैशनवाद और अनैतिक जीवन-शैली समस्त समाज को विनाश के कगार की ओर ले जा रही है। इन सभी समस्याओं का एक ही समाधान जो दिखता है वह है "श्री गुरु ग्रंथ साहिब" में अंकित धुर की बाणी के संदेशों को एक मन, एक चित्त होकर स्वीकार करना और इसको व्यवहारिक रूप में जीवन-शैली का अंग बनाना। ऐसा करने से ही विश्व मानव समाज विकास के मार्ग पर अग्रसर हो सकता है।

सिख-पंथ की उच्चत्तम संस्था शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर की धर्म प्रचार कमेटी ने अपने दायत्व की पूर्ती हेतू यह प्रयास किया है कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब का मानव कल्याण से प्रेरित नूरी संदेश विश्व के प्रत्येक मनुष्य के घर तक पहुंचाया जाए। जज्ञासुओं और विद्यार्थियों की जज्ञासा पूर्ण करने हेतु गुरबाणी, गुर-इतिहास, सिख संस्कृति, सिख रहित मर्यादा, गुरमति संगीत आदि को उनके द्वारों तक पहुंचाने हेतु द्वि वर्षीय सिख धर्म अध्ययन पत्राचार कोर्स प्रारंभ किया गया है। पत्राचार विधि इस कार्य के लिए दृढ़ भूमिका निभा पाने को सक्षम समझ कर अपनाई गई है।

इस उद्देश्य को पूरा करने हेतु गुरु नानक देव यूनिवर्सिटी अमृतसर से सेवानवृत हुए धर्म अध्ययन के प्रसिद्ध विद्वान डॉ जसबीर सिंघ साबर की सेवाएं ली गई हैं। यह कोर्स सरल भाषा मे और सरल विधि अनुसार होगा, जो विद्यार्थियों की रेगुलर पढ़ाई और बंधुओं-बहनों के लिए अपने नित्य-प्रतिदिन के कार्य करते हुए संपूर्ण करना संभव होगा।

अब यह पत्राचार कोर्स में प्रवेश सभी छात्र-छात्रायें, भाई-बहनें, समूह जिज्ञासू योग्य हैं। चाहे वो किसी भी देश-विदेश, धर्म-जाति अथवा वर्ग से सम्बंधत हो। इस कोर्स में प्रवेश प्राप्त करने वालों से किसी प्रकार की फीस आदि नहीं ली जाऐगी। प्रोसपेकट पाठ समगयी आदि नि:शुलक डाक राहीं घरों में भेजी जाऐगी। पंजीकरण के लिए दो वर्षों में एक बार ही १००/- रुयऐ लिये जाऐगे, इस के अलावा ओर कोई खर्चा नहीं लिया जाऐगा। मेरा निवेदन है कि अब आप सभी इस सुनहरी अवसर का भरपूर लाभ उठाने का प्रयत्न करे। मुझे पूर्ण आशा है कि इस पत्राचार कोर्स के साथ जुड़ने वाले समूह जिज्ञासू जहां सिख धर्म के बारे में घर बैठे हुए और कार्य-कलाप करते हुए उच्चस्तरीय प्रयाप्त जानकारी प्राप्त करेंगे वहां अनमत्तियों द्वारा फैलाए जा रहे पतितपन के रुझान को रोकने हेतु सुयोग्य कार्य करेंगे।

हस्ताक्षर/-
अवतार सिंघ,
प्रधान,
शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी,
श्री अमृतसर।